अक्टूबर 2013 पंजीकरण 11587/66 डाक पं.क्र. L2/67/RNP/OSD-71/2012-2014

राष्ट्रीय युवा योजना द्वारा आयोजित

आंतर भारती राष्ट्रीय बाल आनंद महोत्सव

११ से १६ नवम्बर २०१३

८ से १३ वर्ष तक के बच्चों के लिए

अपनी प्रतिभा को विकसित करने का मुक्त अवसर

परिवार निवास

वर्धा (महाराष्ट्र में)

पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण से रेल द्वारा पहुंचा जा सकता है

संपर्क

आशीष गोस्वामी (वर्धा) राष्ट्रीय युवा योजना नई दिल्ली

०९४२२९४१२६२ ०९८१०३५०४०४

नरेंद्र वडगावकर

०९८२५२७८४१२

साकी तालुका शिक्षण संस्था अंतर्गत

२९, ३०, ३१ अक्टूबर २०१३ में

आंतर भारती बाल आनंद महोत्सव

संपर्क

जे.यू.नाना ठाकरे मो.०९४२३१९९१९९

अंतर भारती

ANTAR BHARATI

हिन्दी मासिक

स्वतंत्र भारत के पुनर्निर्माण के

युवा अभियान का सशक्त

अखिल भारतीय अभिव्यक्ति मंच

visit us : antarbharati.org.in

* वर्ष 48 * अंक 10 * अक्टूबर 2013 * मूल्य 10/- रु. * वार्षिक : 100/- रु. * आजीवन : 1000/- रु. ISSN 2321-5372

आंतर - भारती

हिन्दी मासिक पत्रिका

"आंतर भारती" स्वप्नदृष्टा
साने गुरुजी

संस्थाध्यक्ष
ॲड.आनंदमोहन माथुर

प्रेरक, संवर्द्धक-संपादक
स्व.यदुनाथ थत्ते

प्रबंध संपादन कार्यालय
आंतर भारती
साने गुरुजी मार्ग,
औराद शहाजानी - ४१३५२२ (महा.)
Email - antarbharati.patrika@gmail.com

संपादन कार्यालय
द्वारा, डॉ.सी.जय शंकर बाबु
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, पांडीच्चेरी
विश्वविद्यालय, कालापेट, पुदुच्चेरी - 605014
Email - editorbabuji@gmail.com

आंतर भारती, साने गुरुजी का एक स्वप्न जो असीम युवा शक्ति की सृजनात्मक उपयोगिता हेतु समर्पित, युवाओं की सम्भाव्यता, प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करती है.

visit us : antarbharati.org.in

मुख्य संपादक
प्राचार्य सदाविजय आर्य
09823156777

कार्यकारी संपादक
डॉ.सी.जयशंकर बाबु
09843508506

संपादक
गंगाधर घुमाडे • ज्योतिराव लढ़के

मार्गदर्शक
एस.एन.सुब्बाराव • मुकुंद कुलकर्णी • मुरलीधर शहा

सहयोगी
मधुश्री आर्य • गोपाल सत्पुरे
छायाचित्र - सदाविजय आर्य, INTERNET

प्रकाशित सामग्री से प्रकाशक / संपादक सहमत ही हैं ऐसा न मानें

ANTAR BHARATI : A dream of Sane Guruji committed to the constructive utilization of boundless Youth Power, gives new dimensions to the Potentiality, Skill, Inspiration & Belief of the youth.

आंतर भारती (मासिक) पत्रिका मुद्रक, प्रकाशक सदाविजय आर्य द्वारा साईराम ग्राफीक्स, लातूर से गणेश ऑफसेट, उदगीर हेतु मुद्रित कर आंतर भारती संकुल, औराद शहाजानी से प्रकाशित.

इस अंक में...

संपादकीय -	**सबको सन्मति दे भगवान !**	५
आंतर भारती - १	**तुका म्हणे**	७
आंतर भारती - २	**बसव वचन**	८
आंतर भारती - ३	**तिरुवल्लुवर वाणी**	९
काव्य भारती - १	**पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल**	१०
कथा भारती - १	**संघर्ष और सफलता की गाथा - बराक ओबामा**	११
चिंतन भारती - १	**ठोंबरेजी के प्रति किसानों के मन में क्यों है कृतज्ञता ?**	१३
काव्य भारती - २	**कुप्रथा दहेज एवं सुप्रथा दान**	१६
चिंतन भारती - २	**अन्धविश्वास तथा तांत्रिकों के विरुद्ध आवाज़ बुलन्द करने वाले डॉ.नरेन्द्र दाभोलकर की निर्मम हत्या !**	१८
पत्र भारती-१		१९
चिंतन भारती - १	**अपनी पहचान**	२०
श्रद्धांजलि -१	**नि:स्पृह, अध्ययनशील, मूल्यवान संपादक आंदोलन के साथी**	२३
श्रद्धांजलि -२	**साने गुरुजी की आकाशगंगा का उज्ज्वल तारा -आत्माराम शिंदे**	२५
श्रद्धांजलि -३	**श्री आनन्द मोहन माथुर को पत्नी शोक, श्रीमती कुन्ति माथुर का निधन**	२८
समाचार भारती-१	**"हा राजहँस एक" साने गुरुजी के चरित्रग्रन्ध का प्रकाशन**	३१
समाचार भारती-२	**सायकिल से यूरोप यात्रा**	३२
समाचार भारती-३	**शिक्षकों के लिए कार्यशाला संपन्न**	३३
समाचार भारती-४	**सामाजिक प्रतिबद्धता के धनी श्री एकनाथ ठाकुर का सन्मान**	३३

संपादकीय...

"सबको सन्मति दे भगवान !"

भारतीय संविधान ने पारदर्शी सुशासन एवं नागरिक अधिकारों की सुरक्षा के लिए सार्थक संकल्पनाओं के साथ कई प्रावधनों से अक्षरबद्ध है. समय-समय पर इन्हीं संकल्पनाओं को साकार बनाने तथा सही मायने में कार्यान्वित होने के उद्देश्य से संसद द्वारा कई अधिनियम पारित किए जाते हैं और उनके आधर पर नियमावली बनाई जाती है और कार्यान्वित करने के प्रयास किए जाते हैं. 'आदर्श राज्य' की संकल्पना को साकार बनाने की स्वीकृत प्रक्रिया में यह पूरी कार्यवाही शमिल है. भरतीय संविधान की मूल संकल्पनाओं एव संसद द्वारा पारित अधिनियमों के प्रावाधानों के संरक्षण में एवं तदनुसार सभी वर्गों को समान न्याय दिलाने के लिए न्यायिक व्यवस्था द्वारा सक्रिय भूमिका की अपेक्षा की जाती है. ऐसी अपेक्षाओं की पूर्ति के क्रम में विगत दिनों में माननीय उच्चतम न्यायालय तथा केंद्रीय सूचना आयोग द्वारा दिए गए एकाध निर्णयों पर भारतीय राजनीतिक पार्टियों एवं सत्ताधारी शासकों के रवैये को लेकर कई वर्गों द्वारा रोष प्रकट किया जा रहा है, यह जायज़ भी है. एक मामला सूचना अधिकर अधिनियम के तहत राजनीतिक पार्टियाँ अपने आय के स्रोतों के संबंध में पारदर्शी रहते हुए जनता को इसकी पूरी जानकारी देने के लिए बाध्यकार बनाने के संबंध में केंद्रीय सूचना आयोग द्वारा दिए गए निर्णय के विरोध में लगभग सभी पार्टियाँ एक जुट होकर विरोध करने लगी थीं, और इससे बचने के लिए जनमानस की भावनाओं के विरूद्ध उल्टे रास्ते से अध्यादेश पारित करवाने के रूप में परिणाम प्रतिफलित हुआ. एक और संदर्भ में, अपराधिक मामलों न्यायिक व पुलिस हिरासत में गिरफ्त जनप्रतिनिधियों को चुनाव लड़ने पर रोक लगाने के संबंध में उच्चतम न्यायालय द्वारा दिए गए निर्णय की अवहेलना भी सरकारी पक्ष द्वारा एक अध्यादेश का मसौदा पारित कर अनुमोदन के लिए राष्ट्रपति महोदय के पास भिजवाये जाने और उसपर सवाल उठाते राष्ट्रपति महोदय द्वारा लौटाये जाने. तत्पश्चात की राजनीतिक सारगर्मियां और इस पर जोरदार बहस इस बीच जारी है. इसी बीच उच्चतम न्यायालय ने चुनाव आयोंग को निर्देश दिया कि मतदाताओं को यह सुविधा दे कि वे चुनाव के प्रत्याशियों में से किसी को मत न देने के विकल्प भी चुन सकें. इस संबंध में कई बुद्धिजीवियों द्वारा समय-समय पर ऐसे प्रावधान और चुने गए जनप्रतिनिधियों को जनता द्वारा वापस बुलाने के प्रावधान के पक्ष में भी राय दी गई है और मांग भी की गई है. इस पर सत्ताधारी शासकों और विपक्ष व अन्य राजनीतिक दलों का सकारात्मक रवैया न होने के बावजूद माननीय उच्चतम न्यायालय भारतीय संविधान के संरक्षण में अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए समय-समय पर जो ऐतिहासिक निर्णय दे रहा है, उन निर्णयों की परोक्ष अवहेलना के रूप में इन दलों द्वारा संसद का अथवा मंत्रिमंडल के सत्ता का गलत प्रयोग करते हुए जो कुछ कार्यवाई इन दिनों की जा रही है, इन सबसे भारत में आदर्श शासन व्यवस्था को साकार बनने की दिशा से हम कहीं विपरीत दिशा में आगे बढ़ रहे हैं. जनप्रतिनिधियों की इस मानसिकता का सीधा प्रभाव प्रशासनिक व्यवस्था पर भी पड़ रहा है,

जिससे सत्ताधारियों और अधिकारी वर्ग में यह दुष्ट चेतना दिन दस गुनी और रात सौ गुनी बढ़ रही है. इससे आम नागरिकों में मानसिक क्षोभ और दुष्टता के फैलने के भय और आतंक की आशंका आदर्श नागरिकों को में बढ़ती जा रही है. इन सब स्थितियों में नागरिकों को सुरक्षा व न्याय का आश्वासन दिलाने के लिए न्यायिक व्यवस्था संकल्प बद्ध होने के बावजूद सत्ता पक्ष की दुष्ट चेतना से बढ़ते अपराधिक व अनैतिक मामलों की संख्या बढ़ते हुए लंबित होते मामलों की संख्या के आलोक में न्याय भी लंबित होता जा रहा है, यह निश्चय ही एक 'आदर्श राज्य' के अस्तित्व के लिए घातक परिणाम है. आज स्वार्थपूर्ण व पहुँचे हुए नागरिकों में जो दुष्ट चेतना फैल रही है वह निश्चय ही मानवीयता के लिए घातक है. यह तथाकथित आतंकवाद से भी भयानक है.

ऐसी स्थिति का पूर्वानुमान राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने भारत को आजादी हासिल होने से पहले ही लगाया था और आजादी हासिल होने के बाद सत्ता हथियाने से उन्होंने बिल्किुल इनकार कर दिया था. उन्होंने जन सेवा के लिए प्रतिबद्ध होने के अपने जीवन की आरंभिक अवस्था में ही स्वेच्छा से गरीबी स्वीकार की थी. उन्होंने कहा था - "जब मैंने अपने-आपको राजनीतिक जीवन की भंवरों में खिंचा हुआ पाया, तब मैंने अपने-आपसे पूछा कि मुझे अनैतिकता से, असत्य से और जिसे राजनीतिक लाभ कहा जाता है उससे सर्वथा अछूता रहने के लिए क्या करना जरूरी है. मैं आपको अपने उस प्रयत्न की तफसील में नहीं ले जाना चाहता, यद्यपि उसके संबंध में मैंने जो कुछ किया वह दिलचस्प है और मेरे लिए पवित्र भी है." स्वेच्छा से गरीबी स्वीकारने के साथ ही वैध परिग्रह को भी अपनाकर गांधजी 'महात्मा' कहलाये थे. मगर आज राजनीति और सत्ता को संकुचित शब्दों में 'सेवा' की संज्ञा देते हुए अपने आप में दुष्ट-चेतना भर कर इनके द्वारा जो भी व्यवहार नीति अपनाई जा रही है, वह समाज के सामने कोई आदर्श स्थापित करने के लिए बिल्कुल उपयुक्त नहीं है. स्वार्थपूर्ण राजनीतिक, अधिकारिक सत्ता और संपत्ति के अनैतिक संग्रह की प्रवृत्ति के आलोक में गांधीजी का यह कथन भी विचारणीय है- "मैं उस दिन को आता देख रहा हूँ जब धनिकों की सत्ता का अंत होनेवाला है और गरीबों का सिक्का चलनेवाला है, फिर चाहे वह शरीर-बल से चले या आत्म बल से. शरीर-बल से प्राप्त की हुई सत्ता मानव-देह की तरह क्षणभंगुर होगी, जब कि आत्मबल से प्राप्त की हुई सत्ता आत्मा की तरह अजर-अमर रहेगी." गांधीजी की संकल्पनाओं वाला आदर्श राज्य को स्थापित करने से हम कितने दर हैं, आज़ादी के लिए अपने प्राण त्याग करने वाले असंख्य योद्धाओं और भारत माता के सपूतों की आदर्शमय संकल्पनाओं की अवहेलना और गर्हनीय अपराधिक प्रवृत्ति में लिप्त होने की प्रवृत्ति के हमारे समाज में बढ़ते इस दौर पर आज चिंतन करने की बड़ी जरूरत है. समाज में सत्ताधारियों की दुष्टता के बढ़ते और दुष्ट चेतना के फैलते इन क्षणों में जनचेतना की बड़ी जरूरत है. इन स्वार्थपूर्ण सत्ताधरियां को सबक सिखाने के लिए जन आक्रोश और प्रतिरोध की चेतना बढ़े और इसके लिए सबाको सन्मति मिल जाए... "सबको सनमति दे भगवान !"

- डॉ.सी.जय शंकर बाबु

आंतर भारती - १

तुकाम्हणे

(मराठी)

नीचपणा बरवें देवा

नीचपणा बरवें देवा । न चले कोणाचा ही दावा ।।ध्रु।।
महा पुरें झाडें जाती । तेथें लव्हाळे राहती ।।१।।
येतां सिंधूच्या लहरी । नम्र होतां जाती वरि ।।२।।
तुका म्हणे कळ । पाय धरिल्या न चले बळ ।।३।।

हिंदी भावानुवाद :

लघुता से प्रभुता मिलै

छोटापन ही भला है भगवन्, ना कोई बैरी, ना किसी को जलन ।।१।।
बड़े बड़े वृक्ष बह जाते, जब आती है बाढ़ नदी में ।
नन्ही घास बची रहती है, कितना लाभ नम्र होने में ! ।।२।।
आती हैं समुद्र की लहरें, झुक जाती है घास-सिवार ।
ऊँची लहर निकल जाती है, घास का कुछ ना सके बिगार ।।३।।
तुका कहे यदि पाँव थाम लो, विनय-प्रेम से काम अगर लो ।
कौन है ऐसा, ना मानेगा, कौन है ऐसा, जो न झुकेगा ।।४।।

हिंदी - प्राचार्य वेदकुमार वेदालंकार

परिमल २८/८१, विद्यानगर, उस्मानाबाद (महा.)

English Translation

Please God, grant us our childhood

Neechapanaa barawe deva

Please God, grant us our childhood,
That will stand by us through all odds.
Big trees are uprooted by the floods,
While the tiny blades of grass are spared.

The swimmer is humble and goes under,
While he allows the waves to pass over him.
Says TUKA, even the strongest man is helpless,
When someone bows down and holds on to his feet.

English : D.S.VAJRAM
3, Praram, Lakaki Rasta, Pune - 411016

आंतर भारती - २

बसव वचन

मूल कन्नड वचन -
न्याय निष्ठुर दाक्षिण्यपर नानल्ल
लोक विरोधि शरणनारिगू अंजुवनल्ल
कूडल संगमदेवर राजतेज दोविर्पनागि

हिंदी काव्यानुवाद -
न्याय निष्ठुर शिष्ट मैं नहीं हूँ
शरण किसी से डरना नहीं
कूडल संगम देव के तेज में रहकर !

भाष्य - शरण शिव से ऐक्य प्राप्त करने के पश्चात वह किसी से डरता नहीं. न्याय निष्ठुरता भी उसके पास नहीं होती. शरणों में विनम्रता, क्षमाशीलता होती है. जो क्षमाशील और विनम्र होते हैं वे किसी से डरते नहीं. शरणों को लोक शिष्टाचार की, लोक विरोधी होने का भय नहीं होता. जब वे शिव के तेज में एक हो गये तो उन्हें किसी से भय नहीं होता. वे मस्त मौला होते हैं. "हमारा यार है हम में हमें दुनिया से यारी क्या ?" कबीर के इन पंक्तियों की याद दिलाती है बसवेश्वर की यह रचना. दुनिया दारी का विचार तो दुनिया में रहने के लिए, जो दुनिया में रहकर भी दुनिया में नहीं रहते उनके लिए नहीं होता.

शरणों की प्रवृत्ति पर, यह कहे कि निवृत्ति परक स्वभाव पर महात्मा बसवेश्वर का यह वचन मार्मिक टिप्पनी करता है.

- डॉ.इरेश स्वामी
- 'विद्या' १२, ब्रह्मचैतन्य नगर, बिजापूर रस्ता, सोलापुर - ४१३००४,
०२१७-२३४२११४, ०९३७१०११५००

आंतर भारती - ३

तिरुवल्लुवर वाणी

तिरुक्कुरल

तमिल मूल - संत तिरुवल्लुवर
देवनागरी लिप्यंतरण एवं हिंदी हाइकु
अनुवाद - डॉ.सी.जय शंकर बाबु

प्रथम खंड - अरत्तुपाल (धर्म खंड)
अध्याय ४ - अऱन् वलियुरुत्तल (धर्म - महिमा)

अऱत्तान वरुवदे इन्बम् मट्रेल्लाम
पुऱत्त पुहळ्मइल । (कुरल - ३९)

धर्म से सुख,
अधर्म से दुख व
अपयश ही ।

भावार्थ - धर्मबद्ध कर्म से वास्तविक सुख हमें प्राप्त होता है, बाकी सब (अधर्म कार्यों से जो मिलता है, वह) दुःख व अपयश ही होता है ।

चेयऱ् पाल दोरुम् अऱने ओरुवक्कु
उयऱ् पाल दोरुम् पऴि । (कुरल - ४०)

धर्मी हो नित
भव-पथ रोकेगा
धर्म-शिला ही ।

भावार्थ - हर पल सत्कर्म करें । यही सुधर्म जरा-मरण द्वार के आगे पत्थर बनकर भव-बंधन से रक्षा करेगा.

पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल

- टी.ई.एस.राघवन

वडोदरा

वडोदरा बड़ोदा नाम से भी सुज्ञात ।
'नज़र बाग पैलेस' तो संस्कृति स्थल से ज्ञात।
'प्रताप विलास पैलेस' शिल्प कला का केन्द्र ।
पुराने अस्त्र शस्त्र का भी अनुपम केन्द्र ।
'लाल बाग' सुन्दर बाग, सुविदित पिकनिक स्थान।
'लक्ष्मीविलास पैलेस' यात्री मोहक स्थान ।
फतेहसिंह का म्यूजियम, चित्र कला का केन्द्र ।
'वाडकृत आर्ट गैलरी', पुरातत्व का केन्द्र ।
'सयाजी गार्डन' को हम, कहें 'कमाटी बाग'।
और नाम है बाग का 'आयुर्वेदिक बाग' ।
'सुरसागर' औ 'सयाजी' दर्शन करने योग्य।
'काला घोड़' मांडवी अवलोकन के योग्य ।

दीव

पुर्तगाली शासन में पहले था यह 'दीव' ।
स्वाधीन राज्य हो गया, गोवा के सह 'दीव'।।
पश्चिमी सिंधु कूल पर, 'दीव' द्वीप है रम्य।
आता है जनसमुदाय, लखने सागर रम्य ।
अंगरेजी हिन्दी यहाँ, प्रचलित आम जबान ।
वास्तुकला की नींव पर निर्मित कई मकान ।।
'दीव' का आकर्षण है, प्रसिद्ध 'किला' विशाल।
दीप स्तंभ निर्मित यहाँ, दिखता सिंधु विशाल ।।

- १, हनुमंतरायन मंदिर गली,
ट्रिप्लिकेन, चेन्नई - ६००००५.

संघर्ष और सफलता की गाथा - बराक ओबामा

- डॉ.विद्या केशव चिटको

(गतांक से आगे....)

हार्वर्ड से कानून की पदवी लेने के बाद से ओबामा ने अपनी पितृभूमि केनिया जाने का और अपने पिता के सगे संबंधियों से मिलने की कई बार योजना बनाई थी. कभी अपने कामों के कारण, तो कभी नौकरी के कारण तो कभी पैसे की समस्या खड़ी हो जाने के कारण केनिया जाना पीछे ही रह जाता था. पर सिनेटर ओबामा ने २००६ में केनिया जाने का निश्चित ही कर लिया था. इसके पहले वह दो बार केनिया गया था. तब वह अकेला था. अब उसके साथ उसकी पत्नी और उसकी दोनों बेटियां भी थीं.

अब उसके साथ उसके कुछ सहकारी और अधीनस्थ भी रहे. स्टॉक प्रधान पेटे राउस, मीडिया परामर्शदाता डेविड एक्सलॉर्ड, संचार जिला निदेशक गिब्स. ओबामा का यह केनिया का दौरा कांग्रेस के प्रतिनिधि मंडल कोड पूर्ण रुप से शासकीय तथा अफ्रीका व अमरीका - दोनों देशों की विदेश नीतियों की साख पर आधारित था.

दो देशों की राजनीतिक और विदेश संबंध नीति निर्धारण को विशेष ध्यान में रखते हुए इसके पूर्व १९९८ में अध्यक्ष बिल क्लिंटन ने दक्षिण अफ्रीका की यात्रा की थी. और उसका यह दौरा विशेष महत्वपूर्ण इसलिए था कि सेनेटर राबर्ट केन्नडी ने सन् १९६६ में अफ्रीका का दौरा किया था. उसने अपने भाषण में कहा था. संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में रहते अफ्रिकन अमेरिकन के साथ रंग भेद पूर्ण रूप में समाप्त करने का उसका प्रयत्न रहा है और रहेगा...

ओबामा केन्या में कांगो जिबूती और उसके आसपास के ऐतिहासिक स्थानों को देखने के लिए परिवार के साथ गया. जैरोबी के फ्रीडम पार्क जहां उसके पूर्वजो ने गुलाम रूप में सालों गुजारे थे अनेक प्रकार की यातनायें सही थीं. उस स्थान पर जाकर उसने उस पवित्र भूमि के दर्शन

किए. अपनी श्रद्धा आदर व्यक्त किया. नैरोबी युनिवर्सीटी में उसने छात्रों के सामने उद्बोधनपरक वक्तव्य दिया.

नेल्सन मण्डेला एक जिद्दी, साहसी, दृढ़ निश्चयी व्यक्ति अपने तत्वों के लिए और अफ्रिकन्स की आज़ादी के लिए संघर्ष करता रहा. उसने रोबेन आयलंड नामक निर्जन टापू पर अट्ठारह वर्ष जेल में व्यतीत किए थे बराक ने उस स्थान के दर्शन किये. अपने आदर श्रद्धा भाव व्यक्त किये. उस स्थान पर आदरपूर्वक पुष्प हार अर्पित किए.

सन् २००६ में Aids के रोगियों की विश्वजनगणना हुई. उसमें अफ्रीका में सबसे अधिक एड्स बाधित रहे. दस घरों में एक घर यह प्रमाण रहा. बड़ी समस्या रही.

ओबामा ने न्यू नियांजा प्रांतीय सामान्य अस्पताल में जाकर Aids के रोगियों के साथ बातचीत की एक भाषण दिया और दोनों पति-पत्नी ने HIV Test भी कराई.

सफारी राईड लेने के बाद ओबामा अपनी पिता की भूमि सियाया एक छोटा सा गांव लेक विक्टोरिया के पश्चिम में बसा किसुमू यह केनिया का सबसे बड़ा शहर. इस गांव में सभी जनजाति के लोग ही रहते हैं इनके पेट भरने का मुख्य व्यवसाय खेत में काम करना थोड़ी सी कॉर्न और थोड़ी सब्जियां पैदा करना. आर्थिक दृष्टि से एकदम पिछड़ा हुआ. ओबामा यहां अपने पिता के कुछ परिवार और संबंधियों से मिला. अपने पिता दादा परदादा की समाधि पर जाकर उसने श्रद्धापुष्प चढ़ाये. उसके गांव के लोगों से मिलाने के लिए उसके साथ उसकी एक सौतेली बहन औमा रही.

साऊथ अफ्रीका में सर्वत्र उसका भव्य दिव्य स्वागत हुआ. जहां भी जाता वहां के लोग रास्ते के दोनों ओर भारी संख्या में खड़े होकर उसके आगमन की, उसके दर्शन की प्रतीक्षा करते और उससे मिलने पर 'Bless you' आशीर्वाद कहते.

बराक ओबामा दुनियाभर के दर्शकों के लिए एक अंतरराष्ट्रीय आर्कषण के व्यक्ति होने के साथ सम्मान और प्रशंसा के पात्र थे.

केनिया के अध्यक्ष खाइ किबाकी ने जो उसका आदर सम्मान और शाही भोज तथा उत्सव का आयोजन किया था उसे देखकर, अनुभव कर जब मिशेल और ओबामा अपने निवास स्थान पर आए तब उस आनंद को व्यक्त करने के लिए शब्द ही नहीं थे. मिशेल ने सिर्फ उतना ही कहा -

ओह सब कुछ परिणामों से हम अभिभूत हैं.

(क्रमशः)

चिंतन-भारती - १

ठोंबरेजी के प्रति किसानों के मन में क्यों है कृतज्ञता ?

- अमर हबीब

सौंदना यह एक विशेष गाँव है (ढाई सौ उदुंबरों का गाँव) गाँववालोंने नेचरल शुगर के सर्वेसर्वा बी.बी.ठोंबरेजी के सत्कार का आयोजन किया. यह जब मुझे मालूम हुआ तभी 'सत्कार' यह शब्द अनुचित लगा. आजकल सत्कार की इतनी धूम मची है कि उस शब्द की बदबू आने लगी है. यह समारोह तो बिल्कुलही निराला है. एक गाँव के खेती क्षेत्र के उद्योजक कारखानदारी क्षेत्र के एक उद्योजक के प्रति अपनी कृतज्ञता अभिव्यक्त करनेवाले हैं. वीरान धूप का मुसाफिर जिस तरह पेड़ की छाया और एक घूँट पानी मिलनेपर उस पेड़ की ओर जिस तरह देखता है और पानी देनेवाले के हाथों को पकड़कर कहता है, बाबा, तुम्हे दीर्घ आयु प्राप्त हो उस प्रकार की यह भावना है. यह भावना 'सरकार' शब्द में समानेवाली नहीं हैं. यह केवल 'आत्मीयता का उत्सव' होता है.

सौंदना यह गाँव मांजरा नदी के किनारेपर बसा हुआ है. विपुलमात्रा में पानी होने के कारण किसानों का रुझान गन्ने की ओर होना स्वाभविक था. गाँव का क्षेत्र बारह सौ एकर का. उसमें नब्बे प्रतिशत जमीन गन्ने के नीचे. रांजणीका कारखाना होनेतक इस गाँव के लोगोंने बहुत कष्टों को झेला उस समय उनका गाँव आंबा साखर (अंबाचीनी) के क्षेत्र में था. झोनबंदी का कानून होने के कारण दूसरे कारखाने का कानून होने के कारण दूसरे कारखाने को गन्ना दे नहीं सकते थे. अंबासाखर के (अंबाचीनी के) प्रबंधक बीड जिले के.

सौंदना और दूसरे चार पाँच गाँव कळंब तालुके के प्रबंधकों की राजनीति को उसका कुछ भी लाभ नहीं था. जिला परिषद, पंचायत समिती, जिला बँक उस्मानाबाद जिले में होने के कारण अंबासाखर (अंबाचीनी के) प्रबंधक उनकी ओर ध्यान नहीं देते थे. उनकी उपेक्षा की जाती थी. दो-दो साल संभालकर रखा हुआ गन्ना वैसे ही पड़ा रहता. आखिरकार कई बार उसे अपने ही हाथों जलाना पड़ता. अकेले सौंदना गाँव में गन्ना जलाने की कम से कम आठ दस घटनाएँ हुई होंगी. इस भयंकर

अनुभव से गुजरने के बाद गाँववालों को रांजणी का निराला ही तसल्ली देनेवाला अनुभव आया. मुसाफिर को पेड़ की छाया देखतेही जिसप्रकार की अनुभूति होती है उसी प्रकार की अनुभूति को अभिव्यक्त करने के लिए उन्होंने यह आत्मीयता के उत्सव का आयोजन किया था.

नांदेड विश्वविद्यालय के भूतपूर्व माननीय कुलगुरु प्राचार्य मधुकररावजी गायकवाड इसी गाँव के. रांजणी कारखाने की तरक्की होते हुए उन्होंने देखा है. उन्होंने कहा कारखाने के कारण हमारे गाँव में परिवर्तन आया है. २०१० से मैंने आँकडां की सरासरी को देखा है. इन चार सालों में मेरे गाँव में लगभग ग्यारह करोड़ रुपये आये हैं. दस साल पहले भाव कम थे. उन दस सालों में दस करोड़ भी मान लिया तो सरासरी हर साल दो करोड रुपये गाँव में आये हैं. गाँव के कुछ युवक स्थायी अथवा अस्थायी कर्मचारी के रुप में इसी कारखाने में नौकरी करने लगे हैं. उनका वेतन साल को अठारह लाख रुपये आता है डिविडेंट (लाभांश) के रुप में भी कुछ रकम गाँव में आती है. पहले सहकारी चीनी कारखाने वापिस न की जानेवाली जमा राशिसे किसानों के बिलों से कुछ रकम काट लेते थे. लेकिन रांजणी के चीनी कारखाने ने खेती के विकास के लिए बीस लाख रुपये वापिस न किया जानेवाला अनुदान दिया. बी.बी.ठोंबरे जी के कार्य के संदर्भ में मार्मिक विवेचन किया है. उन्होंने कहा, काम और सेवा इस में फर्क होता है मुझे लगता है ठोंबरे साहब काम नहीं करते वे सेवा करते हैं. काम में सख्ती होती है और सेवा में भक्ति होती है. जनसेवा यही ईश्वर सेवा है. ठोंबरे साहब का काम इस प्रकार की सेवा में आता है इसीलिए वह उस स्तर का है.

श्री डी.टी.पालकर गुरुजी गाँव के भूतपूर्व सरपंच. वे जलसंधारण के कार्य को देखते हैं. मजदूरों को लाभ हुआ या नहीं ? इसे जानने का प्रयत्न मैंने उनसे किया. मजदूरों की कमी की समस्या डराती है. ऐसा कहकर पालकर गुरुजीने कहा कि हमारे गाँव के सभी मजदूरों के पास दुधारु जानवर हैं. वे जब गौड़ाई के लिए आते हैं, उन्हें मजदूरी के साथ मुफ्त में चारा भी मिलता है. ठोंबरेसाहबने दूध की डेअरी शुरु की उसका लाभ इन मजदूरों को होने लगा है. हमारे गाँव में लगभग ढाई सौ लिटर दूध का संकलन होता है. दूध का दाम ज्यादा तौर पर बीस रुपये प्रति लिटर तक गया है. लेकिन रांजणी के डेअरी के कारण ४०-५० रु. तक भाव गया है. बिजली की निर्मिति, स्टील प्लांट, डिस्टिलरी, जैविक खत, इन प्रकल्पों के (परियोजनाओं) कारण किसानों की तरक्की हुई है. अब आधुनिक सुविधाओं से पूर्ण अस्पताल शुरु किया गया है. इसमें महिलाएँ, बालक, बूढे इनपर विशेष ध्यान दिया जानेवाला है. गन्नों को तोड़ते समय किसानों को मुसीबतों

का सामना करना पड़ता है इस बात का उन्होंन स्वीकार किया.

अशोक रामचंद्र पालकर ये इसी प्रकारके दु:ख से व्यथित किसान हैं. उन्होंने कहा, 'मैं आठ एकर जमीन का मालिक. उस समय गन्ना नहीं गया इसलिए मुझे गन्ने को जलाना पडा. स्थिति में क्या फर्क पड़ा ? इस प्रश्न का उत्तर देते समय उन्होंने कहा, 'रांजणी का कारखाना शुरु होने के पूर्व हमें दस हजार रुपयों की उथल-पुथल कर नहीं सकते थे. अब हम दो-तीन लाख रुपयों की उथल-पुथल आसानी से कर सकते हैं.' जलसंधारण के कार्य के संदर्भ में उन्होंने कहा, 'शिरपूर पॅटर्न' को हमने जैसा का वैसा नहीं अपनाया. ठोंबरे साहबने उसपर सूक्ष्मतासे विचार करके हमारी स्थितिके अनुसार उसमें परिवर्तन किया है. ३० गाँव का हमारा नेचरल परिवार है. हम सब ठोंबरे साहब के मार्गदर्शन के अंतर्गत एक दिल से काम में लगे रहते हैं.

इस साल अकाल पड़ा इसलिए पानी की समस्या केंद्र में आई. रांजणी के कारखाने को हमेशा गन्ने की विपुलता बनी रहे इसलिए जलसंधारणें के कार्य हात में लिये गये. इस वास्तविकता को नकारा नहीं जा सकता. परंतु इसमें गलत कुछभी नहीं. कोई भी उद्योजक हो इसी प्रकारका विचार करेगा लेकिन किसानों को चाहिए कि वह गन्ने के लिए फोवारे का प्रयोग करें कारखाने का यह आग्रह इस दृष्टिसे विशेष महत्वपूर्ण है इसे स्वीकारना होगा.

उन्नति कैसे होती है ? इसे अगर समझ लेना हो तो उसके लिए नेचरल शुगर से जो 'परिवर्तन' हुआ है उसका अध्ययन करना आवश्यक है. बड़ी बड़ी इमारतें खड़ी करके अथवा बड़ी बड़ी योजनाओं को कार्यान्वित करके विकास नहीं होता. सही मायने में विकास तभी होता है जब किसानों की जेब में ठेठ पैसा जाता है. किसानों की जेब में पैसा आया इसीलिए उन्होंने खेती का विकास किया. आज इस गाँव के ९० प्रतिशत किसान पाईपलाईन से पानी लेते हैं. अकाल से घबराते नहीं बल्कि विकासजी जैसे किसान अपनी हलकी ज़मीनपर दस लाख रुपये खर्चा करके खाद डाल सकते हैं. विलासजी जैसे लोगों के मन में ठोंबरेजी के प्रति कृतज्ञता की भावना होना स्वाभाविक है. सत्कार का नाम देकर मैं इस भावना को ठेस पहुँचाना नहीं चाहता. यह वास्तविकता में 'आत्मीयता का उत्सव' है. खेती और कारखानदारी का यह है पवित्र संगम.

अमर हबीब
अंबाजोगाई - ४३१५१७
मो.नं. ०९८२२९३१९८६

हिंदी अनुवाद - डॉ.विजया वारद (रागा)
'ममता निवास', नांदेड बिदर रोड,
उदगीर - ४१३५१७, जि.लातूर.

'कुप्रथा दहेज एवं सुप्रथा दान'

- गजराज सिंह

इस संक्रामक क्षयरोग से,
लड़ने की हमने अब ठानी ।
डरना नहीं ! विफल होने से,
चाहे कुछ भी हो परेशानी ।।

अभिशाप बड़ा है निम्न कोटि का
घृणित विकार बहुत अवर्णनीय है ।
है दहेज अग्रसर चरमसीमा पर
कहीं रुकने जैसा नाम नहीं है ।।

हो अमित तोष-हर्ष स्वाभाविक
गृह पुत्री-प्राप्ति जब होती है ।
शनैः शनैः जब बढ़ती है वह
नींद माता-पिता की खोती है वह ।।

कैसे विद्याध्ययन संभव है
या प्रचलित यह दहेज जुटाऊँ ।
आता समझ नहीं कुछ मेरे
कैसे अब इसका ब्याह रचाऊँ ।।

वर-पिता का ऋण अपार है
लज्जा नहीं उसे कहने की ।
हल्दी तक का व्यय चुकाओ
क्षमता नहीं और सुनने की ।।

सिर पर केश निहित लघुभ्राता
उतने खरे टके गिन जाना ।
शेष दहेज तो स्वतः विदित है
देने में प्रभु नहीं सकुचाना ।।

सामाजिक स्तर पहचानो
वर कन्या के परम योग है ।
अति उत्तम है वेतन उसका
तीन-गुना ऊपर से भी है ।।

भोज्य-व्यवस्था में क्या व्यंजन
सहस्त्र बरातियों ने नमक पिया है
मय मदिरा माँसाहारी भोजन
मनोरंजनार्थक मस्त डी जे किया है

है सम्बन्धी या प्रतिद्वन्दी ये
नष्ट करने पर तुले हुए हैं ।
करें क्यों नहीं आधा आधा
दहेज पर क्यों अड़े हुये हैं ।।

दान-दहेज दो पृथक पहलू हैं
पुण्य-पाप के द्योतक जो ।
दान बड़ा प्रेरणात्मक गुण
दहेज उतना ही घृणात्मक जो ।।

दहेजप्रथा का दण्ड मित्रगण
हम सबको भरना होगा ।
क्यों न प्रयत्न 'गज' करें परस्पर
अन्त शीघ्र करना होगा ।।

सामाजिक-सदभाव ऱ्हास,
कलंक की है अचूक निशानी ।
डरना नहीं ! विफल होने से,
चाहे कुछ भी हो परेशानी ।।

- दोहा कतर
email - gajrajsingh२०००@yahoo.com

- वैदिक सार्वदेशिक से साभार

अन्धविश्वास तथा तांत्रिकों के विरुद्ध आवाज़ बुलन्द करने वाले डॉ.नरेन्द्र दाभोलकर की निर्मम हत्या !

सारे देश में रुढ़िवादिता तथा अन्धविश्वास के विरुद्ध आन्दोलन

-स्वामी अग्निवेश

महाराष्ट्र में अंधविश्वास के खिलाफ जबरदस्त अभियान चलाने वाले सामाजिक कार्यकर्ता डॉ.नरेंद्र दाभोलकर की मोटरसाईकिल पर सवार दो युवकों ने पुणे की सड़क पर गोली मारकर हत्या कर दी. वे ६९ वर्ष के थे.

डॉ.नरेन्द्र दाभोलकर की नृशंस हत्या पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्चस्वी प्रधान एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त क्रान्तधर्मी संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी ने सामाजिक कुरीतियों और अन्धविश्वास के विरूद्ध बिगुल फूंकते हुए हुंकार भरी कि आर्य समाज सारे देश में अन्धविश्वास और ढोंगी बाबाओं एवं तांत्रिकों तथा तथा धार्मिक ठगों से आम जनता को मुक्ति दिलाने के लिए आन्दोलन छेड़ेगा और महर्षि दयानन्द जी की दी हुई पाखण्ड खण्डिनी पताका को चारों दिशाओं में फहरायेगा. उन्होंने कहा कि हमारा समाज और राष्ट्र आज साम्प्रदायिकता, जातिवाद, भ्रष्टाचार, पाखण्ड, शोषण, नशाखोरी और नारी उत्पीड़न का शिकार है. समाज और राष्ट्र को इन महाव्याधियों से मुक्त कराने के लिए आर्य समाज ने कमर कस ली है. स्वामी जी ने कहा कि हमारे देश में अन्धविश्वासों के अंकुर जितनी तेजी से पनपते हैं उतने अन्यत्र शायद ही कहीं पनपते हों. इन ढोंगी व्यक्तियों के व्यापार पर किसी तरह का कोई प्रतिबन्ध ही यहाँ पर नहीं है. उन्होंने सारे देश में कानून के द्वारा इसे रोके जाने की माँग की. स्वामी जी ने कहा कि धर्मान्धता और रूढ़िवादिता के विरूद्ध आवाज़ उठाने वाले डॉ.नरेन्द्र दाभौलकर को सच्ची श्रध्दांजलि यही होगी कि पूरे देश में इस प्रकार के क्रिया-कलापों को सख्ती के साथ रोका जाये. जो अध्यादेश अभी-अभी महाराष्ट्र सरकार ने बनाया है उसे केन्द्र की सरकार संसद में लाकर **'राष्ट्रव्यापी**

अंधश्रद्धा निर्मूलन' का कानून बनाये.

१९४४ में सातारा महाराष्ट्र में जन्में डॉ.नरेन्द्र दाभोलकर दस भाई बहनों में सबसे छोटे थे. उनहोंने बाबाओं के चमत्कार तथा ढकोसलों के विरूद्ध जबरदस्त अभियान चला रखा था तथा समाज को जागरूक करने के लिये वे राज्य भर में व्याख्यान आदि भी देते रहते थे. उन्होंने लगभग एक दर्जन पुस्तकें भी लिखी थीं. अन्धविश्वास तथा बाबाओं की ठगी के विरुध्द अभियान चलाने के कारण डॉ.दाभोलकर को कई समूहों का विरोध निरन्तर झेलना पड़ रहा था. महाराष्ट्र में "अन्धश्रद्धा निर्मूलन विधेयक" का मसौदा बनाने में डॉ.दाभोलकर ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी. लेकिन ६ बार विधानसभा में पहुँचने के उपरान्त वे इसे पारित नहीं करवा सके थे. लेकिन उनकी शहादत के उपरान्त अब निश्चित रूप से कानून बनेगा ऐसा लगने लगा है. सूत्रों के मुताबिक महाराष्ट्र सरकार अध्यादेश के जरिये इसे तत्काल प्रभव से लागू करने वाली है.

डा.दाभोलकर ने जब यह देखा कि कैसे जादू-टोने के नाम पर कूछ तांत्रिक ओझा और बाबा पूरे समाज को मूर्ख बना रहे हैं. महिलायें बेटे की चाहत में कथित बाबाओं की शरण में जाती हैं और बाबा तथा तांत्रिक उनका शोषण करते हैं. इसी तरह कभी धन के लिए कभी शोहरत के लिए तो कभी किसी से बदला लेने के लिए लोग ढोंगी बाबाओं के जाल में फंस जाते हैं. समाज में ऐसे अंधविश्वास पर लगाम लगाने के लिए उन्होंने महाराष्ट्र में अंधश्रद्धा विरोधी आवाज़ को तेज किया जिससे ढोंगी बाबाओं और तांत्रिकों में खलबली मची हुई थी. और उसी के परिणाम स्वरूप एक निडर सामाजिक कार्यकर्ता षड्यन्त्रकारियों का शिकार हो गया.

- ७, जंतर मंतर, नई दिल्ली - ११०००१

पत्र भारती - १

जून २०१३ का आंतर भारती का अंक मिला मुखपृष्ठ और अंक का साहित्य मन को खूब अच्छा लगा. कोटा के शिबिरार्थियों के छायाचित्र देखकर बड़ा हर्ष हुआ. अब हमने केवल 'पंढरपूर का साने गुरुजी का अनशन और हरिजनों के लिये मंदिर खुला करना यह एक बात न करते हुये हरएक गाँव में हमारे कार्यकर्ता वहाँ के पुराने मंदिर सब दर्शनार्थियों के लिये खुला करने का प्रयास करेंगे तो ठीक होगा.'

- मधु नाशिककर

अपनी पहचान

- *कृष्णमूर्ति*

(अपना मन सदा किसी न किसी बात में व्यस्त रहता है मुख्य समस्या और चिन्ता में फंसा रहता है. समस्या बड़ी हो या छोटी मन जब चिन्ता में रहता है तो समस्या का हल नहीं निकाल पाता. जो मन खाली होता है वही समस्या का समाचार मिलने पर हल निकाल सकता है.)

प्रश्न - हम स्वयं को कैसे पहिचानें ?

कृष्णमूर्ति - तुम्हे तुम्हारा चेहरा मालूम है. कारण तुमने कईबार शीशे में उसका प्रतिबिम्ब देखा है. तुम अपने आप को पूरी तरह देख सकते हो ऐसा एक शीशा है. केवल तुम्हारा चेहरा ही नहीं अपितु तुम्हारे सब विचार तुम्हारी सब भावना, तुम्हारे हेतु, तुम्हारी इच्छा तुम्हारी प्रेरणा, तथा भय भी उसमें देख सकते हो, वह शीशा तुम्हारे आपसी संबंधों का है. यह संबंध तुम व तुम्हारे पालक के बीच, तुम व तुम्हारे शिक्षक के बीच का, तुम, वह नदी, वह पेड़ इस धरती के बीच का है. तुम और तुम्हारे विचारों के बीच का भी हो सकता है. आपसी संबंध यह ऐसा शीशा है कि उसमें तुम कैसे होना चाहिए वैसा ही नहीं तो तुम कैसे हो यह देख सकते हो. एकाधे साधरण शीशे में देखते हुए भी उस शीशेने मुझे सुन्दर दिखाना चाहिए ऐसा मुझे लगता है. पर वैसा होता नहीं है कारण शीशे में मैं जैसा हूँ वैसा दिखता है. और मैं स्वयं को फंसा नहीं सकता उसी प्रकार संबंधों का शीशे में मै स्वयं कैसा हूँ वैसा स्वयं को देख सकता हूँ. मैं लोगों से कैसा बोलता हूँ. जिससे मुझे कुछ मिलेगा ऐसा लगता है उनसे नम्रता से तथा प्रेम से बोलता हूँ. यह मैं देख सकता हूँ. बडे लोग अन्दर आते ही मैं खड़ा हो जाता हूँ. पर नौकर आया तो मैं ध्यान नहीं देता. अर्थात् आपस के संबंधों का ही मैंने निरीक्षण किया तो पता चला मैं कितना झूठा आदर दिखाता हूँ. यह मुझे पता चला. नहीं क्या ? उसी प्रकार वृक्षों से और पक्षियों से, कल्पना से तथा पुस्तकों से मेरा क्या संबंध रहता है उससे भी मुझे मेरा स्वयं का परीक्षण होता है.

तुमने संसार की सारी शैक्षणिक पदवियां प्राप्त कर लीं पर तुम्हें अगर स्वयं का ज्ञान न हो तो तुम अत्यन्त मूर्ख मनुष्य हो. स्वयं को जानना यही शिक्षा का उद्देश्य होता है. स्वयं को जाने बिना परीक्षा में पास होने के लिए सिर्फ जानकारी प्राप्त करना या कापी में लिखना यह मूर्खता है. तुम्हें भगवद्गीता, उपनिषद, कुरान एवं बायबिल में से पढ़कर उसके वचन उद्धृत करना आता होगा. पर तुम्हें अगर स्वयं का ज्ञान नहीं है तो तोते जैसा सिर्फ रटा हुआ बोलने वाले होवोगे. इसके

विपरीत जिस क्षण तुम स्वयां को जानने का प्रयत्न शुरू करोगे तब वह प्रारम्भ अगर छोटा ही होगा तो भी एक अलौकिक ऐसी सृजन की प्रक्रिया शुरू होगी. तुम प्रत्यक्ष में कैसे हो, लोभी, लालची, क्रोधी, द्वेषी हो, मूर्ख हो वह अचानक ध्यान में आएगा. यह एक शोध ही है. वस्तुस्थिति को न बदलते हुए देखना, तुम क्या हो वही केवल देखना यह एक बड़ा आश्चर्यजनक अनुभव होता है. वहाँ से फिर तुम कितना ही गहराई में जा सकते हो कारण आत्मज्ञान का अंत नहीं होता. स्वयं को जानने में ही तुम ईश्वर क्या है, सत्य क्या है तथा तुम्हारे शिक्षकों को उनके शिक्षकों द्वारा मिला हुआ ज्ञान वे तुम्हें दे सकते हैं, परीक्षा भी आप अच्छी तरह उत्तीर्ण होकर पदवी प्राप्त कर सकते हो तथा और भी कुछ प्राप्त कर सकते हो. पर तुम्हारा चेहरा शीशे में जैसा दिखता है वैसा तुम स्वयं को जाने बिना अन्य सारे ज्ञान को थोड़ा महत्व है. इसका अर्थ ऐसा है कि मन का व्यवहार व भावना समझनी चाहिए. स्वयं को जानना यही सुज्ञान का प्रारम्भ होता है. स्वयं को जानते समय सारे विश्व को जान सकते हैं. मानव की सारी प्रगति इसीसे है.

प्रश्न - अगर आप अपनी मानसिक चिन्ताओं की कारणीभूत होनेवाली परिस्थितियां टाल नहीं सको तो उन चिन्ताओं से आप कैसे छूटोगे ?

कृष्णमूर्ति - उससमय तुम्हे उन्हें जवाब देना चाहिए था, नहीं क्या ? चिन्ता से मुक्ति हो इसलिए तुम सामान्यतः समस्या से भागने का प्रयत्न करते हो. तुम मंदिर जाते हो या सिनेमा जाते हो, मासिक पत्रिका पढते हो, रेडिओ सुनते हो या दूसरा उपाय ढूँढते हो, पर भागने से समस्या सुलझती नहीं है. कारण तुम जब वापस आवोगे तब वह वैसी ही होगी. तो फिर शुरू में ही उसका हल क्यों नहीं ढूंढते ?

अब चिन्ता मतलब क्या ? तुम परीक्ष में उत्तीर्ण होवोगे या नहीं यही तुम्हें चिन्ता सताती है और तुम उत्तीर्ण नहीं होवोगे ऐसा डर लगता है इसलिए तुम उसके लिए पसीना बहाते हो, रातभर जागते हो. तुम उत्तीर्ण नहीं हुए तो तुम्हारे मातापिता निराश होंगे और "देखो, मैंने करके दिखा दिया मैं परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ कि नहीं ?" ऐसा कह सकूँ ऐसा तुम्हें लगता है. परीक्षा के दिन तक और परिणाम प्राप्त होने तक तुम चिन्ता करते रहते हो. तुम वस्तुस्थिति से भाग सकते हो क्या, छूट सकते हो क्या ? तुम वैसा कर नहीं सकते हो, हाँ या नहीं ? इसलिए तुम्हें उसका सामना करना पड़ेगा. फिर उसकी चिंता क्यों करते हो ? मन क्या है तुम्हें मालूम है क्या ? बड़े बड़े तत्वज्ञ ा लोगों ने मन का स्वरूप जांचने में अनेक वर्ष डाले और उस विषय में पुस्तकें भी लिखी गई हैं पर आप अगर उस तरफ अपना पूरा ध्यान दोगे तो, मुझे लगता है मन का मतलब क्या है यह ढूंढ

निकालना बहुत आसान है. तुमने कभी अपने मन का अवलोकन किया है क्या ? अब तक तुमने जो सीखा है वह सब कुछ तुम्हारे छोटे से अनुभ्वों की, तुम्हें तुम्हारे पालकों एवं शिक्षकों ने बताई हुई बातों की स्मृति, तुम पुस्तकों से क्या सीखे हो तथा बाहर जगत में क्या क्या देखे हो उसकी स्मृति, यही सब कुछ अर्थात तुम्हारा मन. अवलोकन करना, स्पष्ट निरीक्षण करना, सीखना, वैसे ही सद्‌गुणों का संवर्धन करना, कल्पनाएँ दूसरों को बताना, इच्छा करना, भय लगता यह सब मन ही करता है मन जो तुम ऊपर पृष्ठ भाग पर देखतो हो उतना ही नहीं होता अपितु तुम्हारे मन के गहरे धरातल में रहता ? और वहाँ पहुंचना कठिन है वहाँ वंश की महत्वाकांक्षा, कारण प्रेरणा, संघर्ष रहते हैं. यह सब अर्थात मन, उसी को अनुभूति ऐसा कहते हैं.

वैसे ही मन को व्याप्त होने के लिए कोई विषय चाहिए होता है. उदाहरणार्थ मां बेटी की चिन्ता करती है. गृहिणी अपने रसोई घर की चिन्ता करती है. नेता उनकी लोकप्रियता के लिए या लोकसभा के पद के लिए चिन्ता करता है. जो मन व्यग्र रहता है. तो किसी भी समस्या का हल ढूंढने में असमर्थ होता ? यह तुम्हारे ध्यान में आया क्या ? सिर्फ निर्विषय, खाली मन ही समस्या, समझने के लिए तैयार होता है.

तुम्हारे स्वयं के मन का अवलोकन करो तथा वह कितना अस्वस्थ ? यह देखो. वह सदा किसी बात से घिरा रहता ? कोई कल क्या बोला ? तुम आज क्या सीखे हो, कल तुम क्या करने वाले हो इत्यादि कई बातें उसमें हैं. वह खाली कभी नहीं रहता. यह मन सदा भरा रहता है. वह समस्या का समाचार लेकर उसका हल नहीं निकाल सकता. उसके लिए मन खाली रहना पड़ता है. पर मन का खली रहना बहुत कठिन है. कभी तुम्हारे कमरे में या बाहर नदी के किनारे बैठे तब तुम अपना निरीक्षण करो, अर्थात् जिस खाली मन को छोटा सा जागृत मन कहते हो. वह कितना अविरत रूप से उसमें आनेवाले अनेक विचारों को बसाया हुआ है यह तुम्हें पता चलेगा. फिर वह मन गृहणी के हो या सर्वश्रेष्ठ शास्त्रज्ञ का हो, वह छोटा और क्षुद्र ही होता है और उसने किसी भी समस्या का समाचार मिला हो तो उसका हल निकालना आता नहीं. इसके विपरीत जो मन व्याप्त नहीं होता, जो मन खाली होता है वह मन समस्या का सामना हल ढूंढ सकता है ? कारण ऐसे मन ताजे होते हैं. वह समस्या का नई दृष्टि से विचार करता है उसके स्वयं की स्मृति व परंपरा का पुराना संस्कार लेकर विचार नहीं करता.

('संस्कृतीचा प्रश्न' - कृष्णमूर्ति फाउंडेशन व इंडिया से प्रकाशित पुस्तक का संपादित अंश)

लोकसत्ता से साभार **- हिन्दी प्रस्तुति :डॉ.मधुश्री आर्य**

मो.०९८२३०२९३३६

श्रद्धांजलि - १

नि:स्पृह, अध्ययनशील, मूल्यवान संपादक आंदोलन के साथी

- मेधा पाटकर

श्रावणजी मोडक चले गए ! अकाली, असमयी, अचानक बिल्कुल संजयजी संगवई की तरह ! उन्हीं के नक्शे कदम पर चुपचाप चले गए. डायबेटिस और दिल की बीमारी हो तो मनुष्य इसीतरह चुपचाप अथवा अचानक चला जाता है. अपने आपका ही धक्का लगता है. श्रावणजी मोडक उठकर चले गए. ठीक उसीतरह गए जैसे हर बैठक में से जाते रहे, शोरगुल न करते हुए. गहन वाचन, चिंतन, मनन और लेखन करनेवाला यह आदमी कभी मशहूर नहीं हुआ. लेकिन उसने यादगार बनाई चर्चाएँ - चिंतन, बैठकें. लोगोंसे दिल से मिलनेवाला, मिलनसार सबकुछ दिल से टीपनेवाला ऐसा यह आदमी. उनके पास हर घटनापर लेखन-विश्लेषण लिखनेवाला विश्लेषक का मन और विचार तो उनके पास थे ही, पर सामनेवाले हर व्यक्तिको परखने का हुनर भी था. दिखावा तो इस व्यक्ति को अपवित्रता सा. मनस्वीपन को पसंद करनेवाला इसीलिए तो वे सबके चहेते थे.

मोडकजी धुळे में 'सकाळ' के लेखक संपादक के रूप में मशहूर. फिर भी हमें नर्मदा के, नर्मदा के किनारे के लगते थें. हर विशिष्ट मोडपर मिलते थे और ठेठ वहाँ पहुँचते. फिर वह मणिबेली, डोमखेड़ी का आंदोलन हो या युवा शिबिर, बिलगाँव के छोटे विद्युत प्रकल्प (परियोजना) के उद्‌घाटन से तो हर कार्य में आस्थापूर्वक हिस्सा लेते हुए, निस्पृहता से किसी प्रकार की माँग न करते हुए, सुखद सानिध्य देते थे. होली के लिए जब जब आए, तब भी किसी प्रकार की सुख-सुविधाओंकी अपेक्षा न करते हुए रात को कहीं पर भी सोनेवाले, कार्यकर्ताओं को समझलेनेवाले, अपना कार्य सहजतासे अनजाने निश्चित करके, कार्य में लगनेवाले वे व्यक्ति थे. नर्मदा आनेपर प्रेस नोट लिखना तो उन्हीं का होता था. लेकिन उनके हर काम में, लेखन में, राजकीय समानता, स्पष्टता, अधिक, Every action is political का विश्वास देनेवाली. लेकिन उनकी राजनीति और माध्यम कारण भी लोगों के और प्रकृति के समर्थन में होता था.

विकासनीति की चिकित्सा और विकास के पर्याय की तफसील के साथ व्यवस्था करना यह उनकी विशेषता. उसपर गहन अध्ययन लेकिन वह किताबी बिल्कुलही नहीं. उसमें भी नर्मदा और दूसरे जनआंदोलनों के संदर्भ में अत्याधिक आत्मीयता और समविचार यही आधार.

संजयजी संगवई जाने के बाद 'आंदोलन' के संपादकीय के कार्य में योगदान देना आरंभ किया

और देखते ही देखते वे आंदोलन के संपादक टीम के अविभाज्य और अपरिहार्य हिस्सा बनकर गए. साफ-साफ और कुरकुरे (मजेदार) 'नोट' और हर आंदोलन के कुछ बिखरे, दुहराये गए प्रेसनोट्स के आधरपर संकलित किये हुए जोरदार 'रिपोर्ताज' यह उनका हथकंडा. किसी भी विषय का कोई भी संदर्भ चाहिए हो, उनके लॅपटॉप अथवा मोबाईल से वह पलभर में प्राप्त होगा दुनियाभर के समाचार, घटनाएँ इनपर सूक्ष्मतासे ध्यान और उसका अचूक विश्लेषण के कारण किसी भी मुद्देपर विचार करते समय उसपर प्रतिक्रिया देते समय श्रावणजीकी 'एक्सपर्ट कॉमेंट' लाजवाब होती थी. उसीके साथ, कृष्णा से लेकर पवनातक और अब जन-जल आयोगतक हर अध्ययन के अहवालपर उनकी चिकित्सक कर्मठताकी छाप दिखाई देती. इन दिनों में स्थापित हुए 'शाश्वत विकास न्यास' का भी वे विश्वसनीय - सही अर्थ में 'कार्यकारी' और ये सब कुछ अत्यधिक अहंकार रहित, सहज !

'सकाळ' का कोल्हापूर, कार्यालय बंद करनेवाला संपादक के रुप में वे आंदोलक थे उससे भी अधिक वे आंदोलन के समर्थक के रुप में अधिक तत्पर, कुशल और प्रभावशाली साबित हुए थे. यह हमारा अनुभव, होली के समय आए अथवा शिविर के समय, नये युवा संपादकों अथवा मित्रों को लेकर आते थे. धुळे के युवा संपादक को जोडते जाने का उनका हमेशा का ही जोरदार प्रयत्न होता था. उसी प्रकार इंटरनेट के जैसे नये माध्यम के द्वारा उन्होंने आंदोलन का ही समर्थन किया. 'सकाळ' और 'सामना' का संपादन किया वह भी अपने स्वाभिमान को न छोडते हुए. उनका पिंड (व्यक्तित्व) ही निराला. इसीलिए वे बदलाव को सहजतासे स्वीकारते गए. पत्रकारिता से आय.टी.तंत्रज्ञान की ओर वे मुड गए. अपने नये फर्म को जमाने के लिए रातदिन काम करते हुए भी उन्होंने 'आंदोलन' की वेबसाईट बनाई. नर्मदाकी वेबसाईट बनाने का भी उनका हमेशा ही आग्रह रहा. उन्होंने उनके तनावों को कभी भी हमतक आने नहीं दिया.

सुबह-सुबह उनका स्वास्थ्य बिगड गया, इसका जब हमें पता चला तब हम अस्पताल की ओर चले गए. वे चुपचाप पडे हुए, श्रावणजी मोडक चीं-चपड न करते हुए, हमेशा की तरह ओठों को बंद करके निकल गए. परिवारजन, रिश्तेदार, विभिन्न क्षेत्रों में बिखरा हुआ मित्र परिवार और आंदोलन का बहुत ही प्यारा मित्र इस तरह यकायक सबको छोडकर चला गया यह भी जीवन पद्धतिको फबनेवाला ही रहा.

हमने तो हमारा मित्र, साथी, मार्गदर्शक, कार्यकर्ता खो दिया है. आंदोलन की खबर, भूमिका व्यापक समाज तक पहुँचाने में हम कईबार कम पडते हैं इसका दुःख हमेशाही मन में होता है. लेकिन श्रावणजी तो वह दुआ, व पुल थे. उनका चुपचाप जाना दिल को कसक देनेवाला है.

'आंदोलन' से साभार **हिंदी अनुवाद - डॉ.विजया वारदा (रागा), उदगीर.**

मो. ०९८९०२९८९१५

श्रद्धांजलि-१

साने गुरुजी की आकाशगंगा का उज्ज्वल तारा - आत्माराम शिंदे

- यशवंत क्षीरसागर

साने गुरुजी बाहर से विनम्र, सादे, मितभाषी दिखते थे पर उनके भीतर अन्तःकरण में परदा पद्धति के विरूद्ध, सामाजिक विषमता के विरूद्ध, अन्याय के विरूद्ध दावानल जल रहा था. यह तड़प की ज्वाला गुरूजी के जीवन में एक बार प्रगट होती हुई हमने देखी. गुरुजी की इस आंतरिक तड़प का स्पर्श, उनके विचारों के नजदीक गए हुए जिन भाग्यशालियों को हुआ, उनमें हमारे कार्यकर्ता-मित्र आत्माराम शिंदे की गणना होती है. साने गुरुजी के सच्चे अनुयायी के रूप में स्व.शिंदे की गणना होती है.

साने गुरुजी बालविकास मंदिर के प्रारम्भ से केवल निष्ठावान कार्यकर्ता ही नहीं तो मुख्य मार्गदर्शक व आधारस्तम्भ श्री आत्माराम शिंदे का दिनांक ८ जुन २०१३ को प्रदीर्घ बीमारी से नायगाव में उनके निवास स्थान में दुःखद निधन हुआ. ८४ वर्ष का उनका जीवन अर्थात् साने गुरुजी के चरणों में भावभक्ति से अर्पण किए हुए तुलसीदल थे. उनकी सैकड़ों स्मृतियाँ हम कार्यकर्ताओं के मन मे आज भी हैं. उनकी स्मृतियों को साक्षी रखकर साने गुरुजी इस प्रयत्न में हमें बल दें.

शिंदे को विद्यार्थी अवस्था में सेवादल से राष्ट्रीयता, समाज सेवा के जो संस्कार मिले थे वे उन्हों-ने आजीवन पाले. नायगाव में स्प्रिंगमिल के बाड़े की एक अंधेरी कोठरी में उनका बचपन बीता, भायखला की न्यू सिटी मिल में नौकरी की. उस समय भी वे मिल के तथा नायगाव के गरीब वस्ती के कामगारों के लिए साक्षरता वर्ग चलाते थे. रात को लालटेन लेकर प्रौढ़ों को सिखाते. आगे चलकर सहकार नगर के निवासियों का प्रश्न आया उस समय परिश्रमी शिंदे तथा उनके साथियों ने रहवासियों को आश्रय दिलाया पर इस सब आंदोलन में अपने परिवार के लिए एक जमीन का टुकड़ा प्राप्त कर लें ऐसा उनके मन में आया ही नहीं. इससे ही उनके ध्येयवादी स्वभाव की कल्पना होती है. शिंदे स्वभाव से कट्टर समाजवादी थे. पर उनकी समाजवादी निष्ठा से पक्ष की अपेक्षा वैचारिक अधिष्ठान अधिक लाभान्वित हुए थे. इसलिए समाजवादी पक्ष के विविध बदलाव में भी उनकी निष्ठा अभंग थी. उनके जीवन में कभी जातीयता, ऊंचनीच भाव या धार्मिक दंभ, कभी नहीं दिखे. समाजवाद एक उत्तम जीवन शैली है यह सत्य उन्होंने अपने जीवन में सिद्ध करके दिखाया. आजुबाजू में कितने ही उलट फेर हुए पर शिंदे अपने निष्ठा से सदा प्रामाणिक रहे. अपनी निष्ठा से उन्होंने कभी समझौता नहीं किया.

लगभग ५५-६० वर्ष पूर्व नायगाव कथामाला के निमित्त (हमारे स्नेही व साने गुरुजी कथमाला के संस्थापक स्व.प्रकाशभाई मोहाडीकर के सुझावानुसार) मेरा और आत्माराम शिंदे का प्रथम परिचय हुआ, हम चाल में, गली में, मुहल्ले मुहल्ले में घरों के समूह में कथा कथन करते बच्चों का तथा वहां रहनेवालों का अच्छा प्रतिसाद मिलता था. साने गुरुजी का नाम व यश हम बच्चों से वृद्धों तक फैला रहे हैं यही हमारे मन को आनन्द मिल रहा था. आगे निवासियों के वैचारिक प्रबोधन के लिए 'स्नेह पत्रिका' नामक सायक्लोस्टाइल पत्रिका हम निकालने लगे. खादी ग्रामोद्योग में हमारे सेवाभावी मित्र स्व.यशवंत वंजारे थे. पत्रिका का टंकलेखन करते थे. उस विभाग के, बच्चों और बड़ों की लेखन शक्ति को बल मिले यही हमारा उद्देश्य था. ऑफिस के बाद थोड़ी देर बैठकर बंजारा पत्रिका का टंकलेखन पूरा करते थे.

१९५९ में मुंबई के भू.पू.महापौर प्राचार्य मो.वा.दोंदे के हाथ से मुम्बई मराठी ग्रंथ संग्रहालय - नायगाव मध्यवर्ती कार्यालय के अन्तर्गत "साने गुरुजी बाल विकास मंदिर" की स्थापना की गई. ग्रन्थसंग्रहालय के तत्कालीन प्रमुख कार्यवाह बा.वि.भट के आदेशानुसार स्व.आत्माराम शिंदे तथा हमने "बालविकास मंदिर" की जवाबदारी लेने का निश्चय किया. अत्यल्प वार्षिक मूल्य पर विविध केंन्द्रों के बाल सभासदों को उत्तम आधुनिक पुस्तकें घर पढ़ने के लिए उपलब्ध कराना, यह बाल विकास का प्रमुख उद्देश्य था. एक ही समय में हमारे ४०, ५० बालवाचनालय केन्द्र मुम्बई के चाल में, झोपडियों मे मजदूरों की बस्ती में काम करते थे. पुस्तकें बदल कर लेने के लिए कुछ केन्द्रों पर बाल सभसदों की लाइन लग जाती थी.

प्रत्येक केन्द्र के कार्यकर्ता हमारे वैभव थे. शिंदे अपनी योजनाबद्ध कल्पकता से बच्चों की व कार्यकर्ताओं की बैठक, सहल आयोजित करते थे. महाराष्ट्र के कितने ही महत्वपूर्ण स्थलों पर हम गए. किसी भी कार्यक्रम की योजना बनानी शिंदे की खासियत थी. इसके लिए प्रयत्न पूर्वक ब्योंरा बनाते. कार्यक्रम की तरफ व्यक्तिगत ध्यान देते. इतने ५५-६० वर्षों में कभी कोई कार्यक्रम असफल हुआ हो ऐसा मुझे याद नहीं. जर्मनी के "टेरेस डी होम्स" संस्था ने हमारे काम का परीक्षण कर बाल विकास मंदिर के केन्द्र के लिए दो लाख का अनुदान भी दिया था. कुछ समय बाद दूरचित्रवाणी के आगमन के बाद तथा पालकों ने परीक्षा के नाम पर बच्चों के अवांतर वाचन बन्द किया तब हमें नाइलाज वाचनालय केन्द्र बन्द करने पड़े.

दिनांक २४ दिसम्बर १९६९ को ग्रंथालय के प्रमुख कार्यवाह वा.वि.भट की प्रेरण से आत्माराम शिंदे, लीलाताई प्रभु तथा हम कार्यकर्ताओंने "बाल विकास मासिक" का प्रकाशन प्रारम्भ किया. पद्मश्री प्रा. अनंतर काणेकर के हाथ से मुं.म.ग्रंथ संग्रहालय के प्रांगण में मासिक प्रकाशन का अविस्मरणीय ऐतिहासिक कार्यक्रम हुआ.

हमारे 'बालविकास' शुरू में मुम्बई में छापी जाती थी बाद में अलिबाग के सेवक मुद्रणालय के मालिक श्री मनोहर प्रधान के कुशल मार्गदर्शन में अलिबाग में छापी जाने लगी. हमें सूचित करने में आनन्द और अभिमान महसूस हो रहा कि श्री मनोहर प्रधान तथा शोभाताई प्रधान दोनों पिछले ४२ वर्षो से 'बाल विकास' का प्रकाशन अति कुशलता से तथा साने गुरुजी के प्रति निष्ठा से कर रहे हैं.

संस्थाका तथा मासिक का यह लंबा इतिहास अर्थात संस्था के कार्याध्यक्ष शिंदेजी के कर्तृत्व का, नेतृत्व का, कार्यक्षमता का इतिहास. इसके लिए भावी पीढ़ि सदा उनकी ऋणी रहेगी.

'परोपकाराय सतां विभूतय' ऐसा सुप्रसिद्ध वचन है (सत्पुरुष परोपकार के लिए जीते हैं) आत्माराम शिंदे का जीवन अपने लिए कम परन्तु परोपकार के लिए अधिक जीए. ४० वर्ष की उम्र में उनकी पत्नी इंदिराबाई का स्वर्गवास हो गया तब शिंदे चुनाव प्रचार के लिए कोकण गए हुए थे. शिंदे के सेवाभावी छोटेभई वसंतराव ने अपनी भाभी का अंतिम क्रियाकर्म किया. तभी डेढ दो वर्ष पहले शिंदे के दो तरूण पुत्र एक के पीछे एक गुजर गए तथा एक बहन भी चल बसी. पर यह दु:ख उन्होंने बडे धैर्य से सहा. निरपेक्ष जो काम उन्होंने हाथ में लिया हुआ था उसी की वजह से यह शक्ति मिली थी.

सहकारी आंदोलन में आत्माराम शिंदे ने जो सहभाग लिया था यह उनके जीवन का महत्वपूर्ण अध्याय है 'अपना बाजार तथा अपना सहकारी बँक ये संस्था आज नामरूप में आई है. इनके पीछे आत्माराम शिंदे जैसे निष्ठावान कार्यकर्ताओं की लम्बी व दृढ तपस्या व परिश्रम का हाथ मानना पडेगा.

आत्माराम शिंदे ने नानासाहब शेट्टे बाबूराव भालेराव प्रभृति कार्यकर्ताओं के साथ संगमेश्वर तालुका में किए हुए सेवाकार्य, लोक समस्या निवारण के कार्य अविस्मरणीय हैं. अपने मित्र स्व.नाना साहब शेटे की याद में स्व.शिंदे इनके नेतृत्व में साखरपा में बने हुए भव्य "नानासाहेब शेट्ये सभागृह" इनके जोड मित्र-प्रेम की साक्षी देती है. अपने गांव भडकंबा में उन्होंने स्थापन किए "साने गुरुजी सेवा मंडल" शिंदे के विश्वासू कार्यकर्ता मित्र श्री गणपत शिर्के, श्री बापूराव शेटचा की देखरेख व परिश्रम से ग्रामीण भाग में साने गुरुजी के विचारों का महत्वपूर्ण प्रचार प्रसार कर रही हैं.

आत्माराम शिंदे के कर्तृत्व व यशोगाथा इतने कम शब्दों में लिखना बहुत कठिन है. हमारे आदरणीय मित्र को हम कार्यकर्ताओं की यही विनम्र [illegible]ली है.

- हिन्दी प्रस्तुति : डॉ.मधुश्री आर्य

श्री आनन्द मोहन माथुर को पत्नी शोक, श्रीमती कुन्ति माथुर का निधन

श्रीमती कुन्ति माथुर का जन्म दिनांक 11.11.1930 को इलाहाबाद के एक प्रतिष्ठित कायस्थ परिवार में, स्वर्गीय श्री हजारीलाल माथुर की प्रतिभाशाली पुत्री के रूप में हुआ. श्रीमती माथुर ने अपनी सम्पूर्ण शिक्षा स्नातक, स्नातकोत्तर इलाहाबाद विश्वविद्यालय से पूर्ण करने के उपरान्त शिक्षक की परीक्षा (L-T) कायस्थ पाठशाला से पूर्ण की. अपनी शालेय और विश्वविद्यालय शिक्षा के दौरान श्रीमती कुन्ति माथुर एक प्रसिद्ध खिलाडी रहीं और विश्वविद्यालय चैम्पियन के खिताब से उनको नवाज़ा गया.

श्रीमती कुन्ति माथुर को संगीत के क्षेत्र में भी भरपूर महारत हासिल थी, वे बहुत शौक से सितार और तबला बजाया करती थीं. उनको फोटोग्राफी का भी काफी शौक था.

कुन्ति माथुर का विवाह दिनांक 23.01.1957 को श्री आनन्द मोहन माथुर के साथ सम्पन्न हुआ. उनकी पुत्री डॉ.पूनम माथुर एव. उनके पति डॉ. राजकुमार माथुर इन्दौर शहर के प्रसिद्ध चिकित्सक हैं. श्रीमती माथुर की नातिन डॉ पूजा और उनके पति डॉ. प्रा.शु.अग्रवाल तथा श्रीमती माथुर के

नाती डॉ.राहुल माथुर भी अपनी चिकित्सा क्षेत्र मे. नाम स्थापित कर रहे हैं.

श्रीमती कुन्ति माथुर ने इन्दौर शहर मे. सेन्ट रैफियल्स स्कूल मे. हिन्दी की शिक्षिका के रूप मे. लगातार 37 वर्षो तक सेवाएं. दीं. उनके पढ़ाए हुए बच्चे आज भी उनके मुस्कुराते हुए चेहरे और स्नेहपूर्ण व्यवहार की चर्चा बड़े गर्व से करते हुए सुनाई देते हैं.

वर्ष 2003 मे श्रीमती कुन्ति माथुर के दोनों पैर चिकित्सकीय सलाह पर काट दिये गए, जिसके उपरान्त लगातार 10 वर्षो के लम्बे अन्तराल को उन्होंने बडी सरलता, सहजता और साहस के साथ जिया. कठिनाई के इस लम्बे समय मे. भी वे हमेशा प्रसन्न मुद्रा मे. सबसे मिला करती थी और आखिरी समय तक मुस्कुराती रहीं. ऐसा लगता था मानो. उन्होंने अपनी पीड़ा और कष्ट पर सहज ही विजय प्राप्त कर ली थी.

अपने 37 वर्षो. की अर्जित कमाई में से श्रीमती कुन्ति माथुर ने 15 लाख रूपये एक मकान खरीदकर पर्यावरण से रखा एवं अनुसंधान केन्द्र (CPERD) को दान में दिया. इसके उपरान्त 50 लाख रूपये कुन्ति माथुर सभागृह के निर्माण एवं सज्जा हेतु दान किये.

अभी एक माह की समयावधि के भीतर अपनी कमाई की शेष राशि रू. 50 लाख उन्होंने कायस्थ सभा इन्दौर के शानदार भवन बनवाने के लिये केलिफोर्निया सिटी, बायपास रोड, इन्दौर में भूमि खरीदकर अपने कायस्थ समाज के लोगों को दान में दिया है, जिसका दिनांक 14.09.2013 को भूमि पूजन श्री आनन्द मोहन माथुर के हाथों सम्पन्न हुआ है.

श्रीमती कुन्ति माथुर आन्तर भारती म.प्र. के सभी सदस्यों के लिये एक

ममतामई माँ के समान थीं. आन्तर भारती बाल महोत्सव को हर वर्ष इन्दौर में मनाया जाना चाहिये इस विचार की वो प्रबल समर्थक थीं. भले ही अस्वस्थता के कारण वे बाल मेले के परिसर में न आ पाती हों पर उनकी नजर में बाल मेले की प्रत्येक गतिविधियों की खबर रहती थी. वे बाल मेले के समापन के बाद बाल महोत्सव के चित्रो. का अलबम बडे चाव के साथ देखती थीं. उनकी दिली इच्छा थी कि मध्यप्रदेश में भी आन्तर भारती का कार्य तेजी से बढे.

श्रीमती कुन्ति माथुर सौम्यता, सरलता, सादगी और साहस की एक अभूतपूर्व मिसाल थीं. वर्ष 2003 के पूर्व अपने दोनो पैरों पर चलकर उन्हो. ने चारो धाम यात्रा पूर्ण कर ली थी और वर्ष 2003 में दोनो पैर कट जाने के बाद भी नेपाल काठमाण्डु की यात्रा की थी.

श्री आनन्द मोहन माथुर की सफलता के पीछे जिन दो नारी शक्तियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, उनमे सर्वप्रथम उनकी स्वर्गीय माताजी श्रीमती जयकुँवर बाई सा. और दूसरी उनकी स्वर्गीय पत्नी श्रीमती कुन्ति माथुर रही हैं. जिन्होंने अपनी समस्त शक्ति, सामर्थ्य और समर्पण से सम्पूर्ण परिवार को सवांरने का काम किया है.

दो दिन से अचानक अस्वस्थ होने के बाद भी श्रीमती कुन्ति माथुर सभी परिजनों से ICU में भी स्नेहपूर्ण तरीके से बातें करके सबको आशीर्वाद देकर इस संसार से विदा हुई हैं.

उनको हम सबकी ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि.

"श्याम ची आई" मुझे भगवद्‌गीता जैसी लगती है. जब तक महाराष्ट्र में साने गुरुजी का साहित्य पढ़ा जाएगा तब तक महाराष्ट्र निश्चित जीवित रहने वाला है. सुप्रसिद्ध साहित्यिक पद्मश्री मधुमंगेश कर्णिक के उद्‌गार.

"हा राजहँस एक" साने गुरुजी के चरित्रग्रन्ध का प्रकाशन

प्राचार्य विनायक क्षीरसागर जी ने साने गुरूजी पर लिखे "हा राजहंस एक" जीवनी का मेरे हाथ से प्रकाशन होना बहुत महत्वपूर्ण, नाविन्यपूर्ण, आत्मिकता तथा मुझे कृतार्थ करने वाला कार्यक्रम है. साने गुरूजी के साहित्य पढ़कर हमारी पीढ़ी तैयार हुई है. "श्यामची आई" मुझे भगवद्‌गीता जैसी लगती है. जब तक साने गुरूजी का साहित्य पढ़ा जाएगा तब तक महाराष्ट्र निश्चित जीवित रहेगा. ऐसे उद्‌गार पद्मश्री मधु मंगेश कर्णिक ने दिनांक २० जुलै २०१३ को अपने प्रभादेवी कार्यालय में उपरोक्त ग्रंथ के प्रकाशन करते समय बोले.

अपने मार्मिक विवेचन में पद्मश्री मंगेश कर्णिक आगे बोले साने गुरुजी को आंसु बहुत प्रिय थे. पर आज दुर्दैव से आंसु गुम हो गए. ऐसे समय में विनायक क्षीरसागर ने आत्मीयता से लिखी यह पुस्तक पाठकों के सामने आ रही है. यह सौभाग्य तथा महत्वपूर्ण घटना है. आगे की पीढ़ी संस्कार की दृष्टि से धनी हो ऐसा लगता है. तो गुरूजी का साहित्य घर-घर में पहुंचना आवश्यक है. महाराष्ट्र को जीवित रखने की शक्ति इस साहित्य में है. विनायक क्षीरसागर को बचपन से साने गुरुजी का मातृ प्रेम वात्सल्य मिला प्रेम वात्सल्य मिला उसी से इस पुस्तक का निर्माण हुआ.

चरित्र लेखक श्री विनायक क्षीरसागर बचपन में बोर्डी में गुरूजी के साथ के मात्र वात्सल्य के विलक्षण क्षणों का उपस्थितजनों के समक्ष कथन किया. "बालविकास" के संपादक यशवंत ब. क्षीरसागर बोले "साने गुरुजी के विचारों की यह गंगोत्री है. यह आगे भव्य रूप धारणकर समाज का इतिहास रचनेवाली है." इनके अलावा अखिल भारतीय साने गुरूजी कथामाला के भूतपूर्व प्रमुख कार्यकारी केसरीनाथ पाटील, स्व.बळवंतराव क्षीरसागर आध्यात्म केन्द्र के अध्यक्ष श्री यशवंत जाधव प्रधान कार्यवाह श्री अरविंद क्षीरसागर ने अपना मनोगत व्यक्त किया. साने गुरूजी बालविकास मंदिर के कार्यवाह श्री जीवन यादव ने समारंभ का प्रास्ताविक व प्रमुख कार्यवाह श्री जीवन यादव ने पुस्तक में संपादित किया हुआ मधुमंगेश कर्णिक के आशीर्वाद के तथा पुस्तक में उद्‌धृत ऱ्हदय स्पर्शी अंतिम प्रकरण का भावपूर्ण वाचन किया. साने गुरूजी की प्रेमी श्रद्धालू लोगों की उपस्थिति व प्रसन्न वातावरण में इस पुस्तक का प्रकाशन कार्यक्रम हुआ जो चिरस्मरणीय है.

समाचार भारती - २

सायकिल से यूरोप यात्रा

- प्रशान्त नवरे

तेज गति स्पर्धा करने वाले मनुष्य को 'बटन स्टार्ट' की आदत हो गई है. इसलिए सब द्विचक्री वाहन भी केवल बटन स्टार्ट वाली ही आ रही हैं. ऐसा जब है तो पेडल मारकर चलाने वाली सायकिल को कौन पूछता है ? पर विशेष उद्देश्य से आठ पुरूष और दो महिला गट सिर्फ सायकल से ही यूरोप भ्रमण के लिए मंगलवार को रवाना हो गए. आगामी तीस दिनों में यूरोप के छः देशो में से सायकल पर १३०० किलोमीटर की दूरी तय करनेवाले हैं. उनकी यह यात्रा पेरिस से शुरु होकर २८ सितम्बर के दिन रोम में पूर्ण होगी.

यूरोप के कई देशों में सायकल का सिर्फ प्रोत्साहन ही नहीं बताते अपितु सायकल सवारों का स्वागत भी किया जाता है. हमारे पास उल्टा दृश्य है इसलिए पर यूरोप भ्रमण करके वहाँ की सायकल संस्कृति क्या है ? और भारत में कैसे प्रसारित किया जाय यह इस दौरे के पीछे का मुख्य उद्देश्य है ऐसा इस गट प्रमुख गिरीश महाजन ने "वृतान्त" को बताया.

धनंजय मदन, गिरीश महाजन, सुनील पाटील, वैशाली हळदवणकर, दीपा शेबेकर, प्रकाश पटवर्धन, मनोज चौगुले, किशोर केणी, राजेशा पुट्टीगौडा और सतीश साठे, ऐसा इस का समूह २५ से ५० वर्ष आयु का है. ये सब सायकल के प्रेमी पिछले दस वर्ष से सायकिल चलाते हुए इकठ्ठे हुए. भारत और श्रीलंका का दौरा करके अब अपना मोर्चा यूरोप की तरफ निकला है. पेरिस, ॲम्सटरडॅम, जर्मनी, एमटीबीट्रेल, इगल्ट नेस्ट, यह डॉल्फ हिटलर का घर, डेन्यूब नदी के किनारे से आस्ट्रिया, व्हिएना रोम, ॲटवर्क रॉटरडम, फ्रॅन्कफर्ट, फ्रुडेन स्टार्ट, म्युनिक फ्लोरेन्स और रोम ऐसा 'बियान्ड बोर्डस आफ बायसिकल्स' का सायकल प्रवास करनेवाले हैं. यह मंडली प्रतिदिन दस किलोमीटर तय करने वाले हैं.

बियॉन्ड बॉर्डसऑन बायकिल्स :

इस यात्रा का वर्णन हर सप्ताह नियमितरूप से 'लोकसत्ता के "ट्रेकइट"' इस पृष्ठ पर टपा और व्हिवा पूरक अंक में पढने को मिलेगा. और यात्रा के खास छायाचित्र वाचकों के लिए 'लोकसत्ता' के सांकेतिक स्थान तथा फेसबुक पेज पर देखे जा सकते हैं.

सचिन तेंडुलकर की शुभकामनाऍं :

इस गट के सतीश साठे के दादर की इमारत में मास्टर ब्लास्टर सचिन तेंडुलकर के सगे चाचा रहते हैं दो दिन पूर्व सचिन अपने परिवार के साथ अपने चाचा को मिलने आया था. उसको यूरोप यात्रा की सायकिलिंग के बारे में पता चला तो उन्होंने सारे गट को शुभकामना दी.

('लोकसत्ता' से साभार)

हिन्दी प्रस्तुति : डॉ.मधुश्री आर्य

समाचार भारती - 3

शिक्षकों के लिए कार्यशाला संपन्न

किनवट के साने गुरुजी रुग्णालय के शिक्षण व्यासपीठ की ओर से राष्ट्र सेवा दल के सहयोग से किनवट परिसर के शिक्षकों के लिए एक कार्यशाला दि. १६ सितम्बर २०१३ को आयोजित की गई. जिसमें पचास शिक्षक सम्मिलित हुए.

मूल्य शिक्षण के माध्यम से सुसंस्कार व सामाजिक मूल्य विद्यार्थियों तक पहुंचेंगे ऐसा श्री सुराणा ने कहा. इस कार्यशाला के लिए सेवादल के भू.पू.अध्यक्ष श्री पन्नालाल सुराणा व सचिव श्री बाबा साहेब नादफ भी साधन व्यक्ति थे.

डा.बेलखोडे ने प्रास्ताविक भाषण दिया. कार्यशाला का संचालन व आभार प्रदर्शन श्री बी.के.राठोड ने किया श्री नदाफ ने कार्यशाला में वैचारिक गीत भी गवाए.

समाचार - भारती -

सामाजिक प्रतिबद्धता के धनी श्री एकनाथ ठाकुर का सन्मान

साने गुरुजी के प्रति अपार निष्ठा रखनेवाले, राजनीति में रहकर भी उससे अलिप्त, भूतपूर्व संसद सदस्य, सामाजिक प्रतिबद्धता के कृतिसंपन्न निष्ठावान, बैंकों के लिए प्रशिक्षण के कार्य में मग्न, सारस्वत बँक मुंबई के अध्यक्ष, साने गुरुजी कथामाला के विश्वस्त, भारतजोड़ो अभियान के संरक्षक, आन्तर भारती के हितचिंतक, अच्छे कार्यों के लिए सशक्त सहायता करने वाले उत्तम सोच के धनी **श्री एकनाथ ठाकुर** को **लोकमान्य मातृभूमि पुरस्कार** बेळगांव (कर्नाटक) में गोवा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर परिकर के करकमलों से दिया गया. इस अवसर पर साहित्यिक मधु मंगेश कर्णिक तथा गोव के भू.पू.मुख्यमंत्री श्री रमाकांत खलप भी उपस्थित थे. पुरस्कार में प्राप्त **रु.पांच लाख में एक लाख जोडकर रु. छह लाख** उन्होंने महाराष्ट्र में कार्यरत अंधश्रद्धा निर्मूलन के कार्य के लिए दे दिए ऐसे वर्तमान **भामाशाह श्री एकनाथ ठाकुर** पर आन्तर भारती परिवार गर्व कर उनका अभिनंदन करता है.

भारत जोड़ो रजत जयंति यात्रा

शांति निकेतन से ओखा

१५ जनवरी - १५ फरवरी २०१४

संपर्क

डा.अशोक बेलखोडे

मो. ०९८२२३१२२१४

E-mail : saguruki@gmail.com

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

तमिलनाडु हिन्दी साहित्य अकादमी, चेन्नै

१०, ११, १२ जनवरी २०१४

"भूमंडलीकरण एवं नई औद्योगिकी का हिन्दी पर प्रभाव" विषय पर

भोजन-निवास की व्यवस्था

पंजीकरण शुल्क रु. ५००/-

: संपर्क :

डा.मधु धवन

मो. ०९३८१०४९०२०

E-mail : madhu.dhawan13@yahoo.com